

ग्रीन हाल गुरूद्वारे विच्च विहार

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)



सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान दी जै



★ ४ अस्सू शहनशाही सम्मत अठु इंगलैंड लंडन
ग्रीन हाल गुरूद्वारे विच्च
विहार होया ★

धरनी कहे मैनुं कैहदे धवल धौल धरत, जगत लोकमात मिली वडयाईआ। मेरा मालक खालक अगम्मा वाली अर्श, अर्शी प्रीतम बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्म विच्च मेरी अगम्मी गर्ज, अन्तश समझ सके कोई ना राईआ। जिस दा खेल सदा असचरज, आदि अन्त मध भेव ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड्ड वडयाईआ।

धरती कहे मेरा रूप मिटी खाक, जल धारा नाल समाईआ। मैनुं पत्तत्त कहो कि पाक, पुनीत दा भेव कोई ना आईआ। मैं आदि दी चाकरी विच्च चाक, जुग जुग सेव कमाईआ। मेरा इक्क साहिब उते विश्वास, जो विशिआं तों बाहर नूर अलाहीआ। जो सर्व गुणां गुणतास, गुणवन्ता इक्क अखवाईआ। जिस दा आदि असुते प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा शब्द सुत दुलारा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश पताल पावे रास, मण्डल मंडप वज्जे वधाईआ। उह साहिब स्वामी अन्तरजामी जो मेरे अन्तर निरंतर करे निवास, बाहरों नजर किसे ना आईआ। जिस विष्ण ब्रह्मा शिव खेल कीता तमाश, त्रै आपणा हुक्म सुणाईआ। संसारी भण्डारी सँघारी वेखण खेल तमाश, भेव अभेदा आप जणाईआ। त्रैगुण माया झोली पा के दात, त्रैगुण अतीते त्रैभवण धनी दिती वडयाईआ। अप तेज वाए पृथ्वी अकाश पंजां

तत्तां बख्ख के साथ, सगला संग जणाईआ। धुर दा हुक्म सच पैगाम शब्द अगम्मी सतिगुर दिता आख, बिन अक्खरां कीती पढ़ाईआ। धरनी मेरे चरन कँवल दी राख, धूढ़ी इक्को इक्क जणाईआ। जिस दी मैं सदा सुणां फरयाद, आह आपणे विच्च समाईआ। मेहरवान महिबूब हो के इक्को धुर दी देवां दाद, वस्त अमोलक अगम्म वरताईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत करां अबाद, मेहरवान हो के मेहर नजर उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

धरनी कहे किरपा कीती मेरे भगवन्त, मेहरवान दया कमाईआ। मेरी चरन धूढ़ बणा के बणत, सति सति विच्च टिकाईआ। धुर स्वामी बण के कन्त, कन्त कन्तूहल वेख वखाईआ। विष्ण ब्रह्मा शिव धार जणाई नाल रलाया लक्ख चुरासी जन्त, जीवां रंग रंगाईआ। बोध अगाधा बण पंडत, बुद्धि तों परे कीती पढ़ाईआ। आपणा खेल दस्स अनन्त, अनन्त कलधारी आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते खेल कीता अपार, पुरख अकाल दिती वडयाईआ। धवल कहे मेरा धौल ने चुक्कया भार, जग नेत्र वेखण कोई ना जाईआ। धरनी कहे मैं खेल खेलां विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। धवल कहे मेरा लेखा ओस प्रभू दे नाल, जिस पारब्रह्म पतिपरमेशवर दा अन्त कहण कोई ना पाईआ। उह बख्खिश कीती बख्खणहार, रैहमत आपणी सच कमाईआ। लक्ख चुरासी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मेरी झोली दिती डार, सीस जगदीश आपणा हत्थ टिकाईआ। त्रैगुण माया पंजां तत्तां दे अधार, तन वज्जूद करी रुशनाईआ। आत्म जोत कर उजिआर, परमात्म कीती सच रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म खेल कीता अगम्म अपार, अपरंपर आपणा राह चलाईआ। ईश जीव कर त्यार, त्रैगुण अतीते आपणा रंग दिता चढ़ाईआ। एह मैं खेल तक्कया अनडीठ, अनडिठडी हरिजू कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक्क अखवाईआ।

धरनी करे मेरे उत्ते आए जीव जंत मानस, सोहणा रंग रंगाईआ। मेरे विच्च ना कोई निंदरा ना कोई आलस, गमी चिन्ता ना कोई जणाईआ। मेरा रूप अनूप प्रभ प्रगटाया खालस, दूजा संग ना कोई रलाईआ। मैं उस दी धार ओसे दा बालक, ओसे दा नूर ओसे दा जहूर ओसे दा रूप नजरी आईआ। मेरा आदि अन्त दा इक्को सालस, दूजा विचोला वेखण विच्च ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते पंज तत्त कीते प्रधान, तन वज्जूद दिती वडयाईआ। शरीर बणाया महान, वखो वक्ख खेल खिललाईआ। नौं दवारे खोल दुकान, आसा मनसा तृष्णा सभ विच्च टिकाईआ। दीपक दीआ जोत जगा महान, नूर जहूर दिता टपकाईआ। अमृत रस खेल आपणे विच्चों कीता परवान, परम पुरख आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच हुक्म इक्क सुणाईआ।

धरनी कहे मनुशां अंदर प्रभू कीती किरपा, मेहर नजर उठाईआ। रूप दस्सया आपणा इक्क दा, एकंकार दिता समझाईआ। जिस दा लेखा ब्रह्मा पारब्रह्म दी धार नाल लिखदा, चारे वेद देण गवाहीआ। उह इशारा करे निरगुण निरवैर निरँकार जिस नून कदे कोई ना जितदा, हार विच्च सर्ब रखाईआ। उह मालक खालक प्रितपालक रूप धर अगम्मे पित दा, लक्ख चुरासी आपणी गोद टिकाईआ। धरनी कहे मेरा बिन नैण तों राह होया बिट बिट दा, वेख वेख बिघसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे मेरी कीती अगम्मी वंड, मेरे टुकड़े टुकड़े दिते कराईआ। मेरे अंदर आया रंज, मैं रो के दिती दुहाईआ। पुरख अकाल किहा ना कोई मेरा सवेर ना कोई संझ, घड़ी पल ना कोई वंडाईआ। आदि जुगादि रूप धरां सूरा सरबन्ना, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

धरनी किहा मेरे मालक मेरे सुलतान, साहिब तेरी सरनाईआ। मेरे वल मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। तेरी चुरासी होई प्रधान, चारे खाणी वज्जे वधाईआ। मैं वेख के होई हैरान, हैरानी विच्च तेरे अग्गे दिआं दुहाईआ। एनां दा वारस एनां दा मालक कवण होवे विच्च जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा भेव दे चुकाईआ। झट मेरी बेनन्ती पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार एकंकार कीती परवान, बिन अक्खरां मैंनू दिता दृढाईआ। तूं फिकर ना कर मैं तेरी सार पावां आण, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते रूप धरया भगवान, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। सन्त कुमारा हो प्रधान, परदा दिता उठाईआ। बराह खेल कीता महान, मैंनू दिती माण वडयाईआ। यगे पुरुष कीती कल्याण, हाव गरीव नाल रलाईआ। नर नरायण हुक्म दिता आण, संदेशा धुरदरगाहीआ। कपल मुन कर प्रधान, दत्ता त्रै वंड वंडाईआ। रिखव भेव खुलाया महान, प्रथू मेरे विच्चों मथ के अन्न दिता कढाईआ। मत्स खेल कीता महान, सागराँ विच्च समाईआ। कछप कर प्रधान, चौदां रतन कछे चाई चाईआ। फेर नरसिंग रूप धर महान, भगतां रक्खया करे बेपरवाहीआ। बल बावन होए प्रधान, मेल मिलावा सहज सुभाईआ। हरी हरि करे कल्याण, लेखा चुकाए थाउँ थाईआ। गज मेला मेले परम पुरख आपणी धार, धरनी कहे मेरे उत्ते दिती वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते प्रभ आउण लग्गा निरगुण सरगुण धार, आपणा वेस वटाईआ। आपणे नाम दा दस्सण लग्गा जैकार, धुर दी सिपत सलाहीआ। खेल दस्सया अपर अपार,

अगम्म अगोचर दिता दृढ़ाईआ। वेस अनेका कर जोती जाता हो उजिआर, हुक्मी हुक्म इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साची बणत बणाईआ।

धरनी कहे सतिजुग सति धर्म दी धार, लोकमात वज्जी वधाईआ। मैं वेख्या पारब्रह्म करतार, कुदरत दा मालक इक्क अखवाईआ। जिस दा हुक्म संदेशा लिखण पढन तों बाहर, बिन कलम छाही कागज रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप चुकाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते होर होया दयाल, दीन दयाल कमाईआ। सति बणाई सच धर्मसाल, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। अमृत रस कीता परवान, परम पुरख आपणे रंग रंगाईआ। विख खेल कीता महान, विष परदा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक्क रंगाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते निरगुण ने चलाईआं धारां दो, आदि पुरख खेल खिलाईआ। किसे दे अंदर अमृत रस दिता चो, निझर झिरना दिता झिराईआ। किसे नूं मध पिआ के होका दिता हो, हँ ब्रह्म हँकार विच्च रखाईआ। किसे दे अंदर लोइण तीजा खोलू के दिती लोअ, नूर जोत कीता रुशनाईआ। किसे दे अंदर माया ममता भर के मोह, हँकार विकार विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते खेल होया अब्बला, मैं रो के दिता सुणाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले तूं आदि जुगादी इक्क अकल्ला, दूजा नजर कोई ना आईआ। मैं चौहन्दी मेरा इक्क होवे महल्ला, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। लेखा मुका दे जल थल्ला, महीअल तेरा नूर नजरी आईआ। तेरा प्रकाश दीपक इक्को होवे बला, दूजा रंग ना कोई चमकाईआ। जिस तरां सचखण्ड दवारा तेरा निहचल धाम अट्टला, धरनी कहे मातलोक मैंनूं दे वडयाईआ। मैं गल विच्च पावां पल्ला, निव निव मस्तक धूड लावां छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

पुरख अकाल किहा सुण धरनी धवल धार, धर्म धार दिआं जणाईआ। मेरा खेल होवे अपर अपार, भेव अभेद ना कोई समझाईआ। सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग खेल करां विच्च संसार, संसारी आपणा हुक्म वरताईआ। तेई भेज भेज अवतार, अवतर आपणा रूप बदलाईआ। राम परस राम रामा कर खबरदार, राम रामा परदा लाहीआ। वेद व्यास दे आधार, कृष्णा काहना गंड पवाईआ। बुद्धि तों परे बुद्ध नूं कर के खबरदार, बोध आपणा दिता समझाईआ। फेर रूप धर अपार, अपरंपर स्वामी कहे मैं आपणा वेस लैणा बदलाईआ। आपणे नाम दी नाम नाल वंड करदा आवां जुग चार, इक्क इक्क दे नाल बदलाईआ। राम

कृष्ण तों हो बाहर, अगला खेल आप खिलाईआ। तत्तां वाला सरगुण सरीर कर त्यार, पैगबर रूप बदलाईआ। आपणे नूर नूं गौड गुड कहां विच्च संसार, गाइड आपणा आप आप प्रगटाईआ। मूसे नूं सुद्ध के मूह दे भार, ईसा आपणे रंग रंगाईआ। मुहम्मद नूं कर के खबरदार, तीस बतीसा ढोला दिआं समझाईआ। शरअ शराइत वंडणी धरनीए मेरा तेरे उते जुग चौकड़ी चलदा अगम्म विहार, जिस नूं चार जुग दे शास्त्र कहण कोई ना पाईआ। क्योँ मैं आदि जुगादी इक्क इकल्ला एकंकार, दूजा नजर कोई ना आईआ। धरनी झट्ट रो पई धाहां मार, बिन हत्थां तों हत्थ उठाईआ। मेरे पारब्रह्म पतिपरमेशवर तेरी आत्मा तेरा नूर उजिआर, तेरे तेरे विच्च समाईआ। सभ नूं इक्को दस्स दे आपणा घर बाहर, दूजा गृह नजर कोई ना आईआ। जे तूं सचखण्ड दवारे दरगाह साची इक्क इकल्ला निरगुण नूर जोत उजिआर, क्योँ मेरे उते मनुशां दी दीनां मजहबां विच्च वंड वंडाईआ। क्योँ आपणे नाम दे हिसे करें जुग चार, इक्को नाम आपणा दे समझाईआ। मैं तेरे चरनां दी धूढ़ लावां छार, मस्तक टिकका खाक रमाईआ। झट दीन दयाल पुरख अकाल कीता खबरदार, बखबरे तैनुं दिआं समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप उठाईआ।

पुरख अकाल कहे मैं खेल खिलाउँदा हां। खलक दा खालक इक्क अखवाउँदा हां। प्रितपालक नाम धराउँदा हां। दीन दयाल हो के वंड वंडाउँदा हां। ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी रचन जणाउँदा हां। जेरज अंड उत्भज सेतज रंग रंगाउँदा हां। ढोला जिह्वा दस्स, नाम बत्ती दन्द पढाउँदा हां। वक्ख वक्ख आपणा दस्स के परमानंद, अनन्द अनन्द विच्चोँ जणाउँदा हां। आत्म परमात्म परमात्म आत्म आदि दा इक्को छन्द, बाकी सोहले ढोले गीत सिफतां वाले जणाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क वरताउँदा हां।

धरनी कहे मेरया महिबूबा क्योँ मेरे उते करें गजब, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। बहु करी ना जा मजहब, दीनां वंड वंडाईआ। इक्को तेरे पूजण होवण कदम, कदमबोसी विच्च सारे सीस निवाईआ। भावे संख्या कोटन कोट हो जाए असंख असंखा पदम, पद तेरा इक्को सोभा पाईआ। क्योँ तूं सभ नूं पंजां तत्तां वाला दिता बदन, विच्च आत्म रक्ख के परमात्म नूर कीता रुशनाईआ। तूं सच स्वामी सभ दा सज्जण, वैरी रहण कोई ना पाईआ। बेशक जे तूं घडे भाण्डे अन्तम भज्जण, थिर नजर कोई ना आईआ। मेरे मेहरवाना सभ नूं अन्तर निरंतर इक्को आपणे नाम दी देदे लगन, लग मातर दा डेरा ढाहीआ। तेरे दीपक जोती घर घर साढे तिन्न हत्थ काया मन्दर अंदर जगण, गृह गृह होवे रुशनाईआ। शब्द अनादी नाद अगम्मे वज्जण, सोई सुरत सुरत उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप चुकाईआ।

धरनी कहे प्रभू तूं की कीता खेल विच्च अवाम, आम दे मालक दिआं जणाईआ। तूं शरअ शरीअत दस्स इस्लाम, इसम आजम इक्क जणाईआ। अल्ला रूप हो मेहरवान, महिबान

बीदो आपणा परदा दिता उठाईआ। मैं तेरे कदमा विच्च सीस झुकावां आण, बिन सीस सीस निवाईआ। तूं वस्त अमोलक देणी दान, दाते दानी आप वरताईआ। मैं पहलों तक्कया मेरे ते सीता आया राम, काहना कृष्ण आपणा डंक गया वजाईआ। हुण होर खेल कीता शरअ दा शरअ नाल नाम दा कलमे नाल होवे कत्लेआम, कातल मकतूल समझ कोई ना पाईआ। मैंनू आपणे नाम कलमे विच्च वक्ख वक्ख ना कर गुलाम, बंधन जंजीर ना कोई पवाईआ। मैं चौहुंदी तेरा इक्को दा होवे इंतजाम, बन्दोबस्त अवर ना हत्थ फडाईआ। सारी सृष्टी दा सांझा करदे पीण खाण, आत्म ब्रह्म दे दृढाईआ। मैं पहलों तक्कया सारे गरु दी पूजा करे जहान, हुण तेरी गरु नूं जबा कर के खाण वाले खुशीआं रहे मनाईआ। झट्ट हुक्म होया मेहरवान, संदेसा दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड्ड वड्डयाईआ।

परवरदिगार किहा धरती ना रो बिन अक्खां, हन्झां हार बणाईआ। मैं बेशक सभ दा सखा, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। मैं खेल करां कोटन वार लक्खां, गिणती गणत ना कोई गिणाईआ। मेरा नूर प्रकाश जोत लट लटा, दो जहानां डगमगाईआ। मैं वसणहारा घट घटा, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। पर मेरा खेल मैं दीन मज्जब दीआं जरूर तेरे उत्ते बणाउणीआं वट्टां, हटां अवतारां पैगम्बरां कोलों रखाईआ। औह वेख मुहम्मद दे पिच्छे नानक निरगुण धार आउंदा नट्टा, सरगुण वज्जे सच्च वधाईआ। जिस दे कोल नाम संदेसा सति दा होणा जिस विच्च होणी सत्ता, सतिनाम जपाईआ। ओस दा सुण लै कमलीए पता, पतिपरमेशवर आपणा खेल खिलवाईआ। उहदा अंदर बाहर गुप्त जाहर इक्को नाल होवेगा मता, मत मतान्तर ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड्ड वड्डयाईआ।

धरनी किहा प्रभू कर लै छेती, मेरी तेरे अगगे दुहाईआ। जे सतिगुर नानक होवे तेरे घर दा भेती, परदा मेरा दए खुलाईआ। मैं वी आदि तों तेरी बेटी, तूं पिता मेरा इक्को नजरी आईआ। मेरे नाल नानक नूं भेज के करदे नेकी, मेरी माण निमाणी दी इजत लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलक्ख जगाईआ।

पुरख अकाल किहा नानक आवे निरगुण धार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शब्दी शब्द करे जैकार, ढोला धुरदरगाहीआ। जिस दा सरोता बणे सर्ब संसार, सृष्टी दृष्टी अंदर वज्जे वधाईआ। उह उठ उठ धावे चार कुण्ट वारो वार, भज्जे वाहो दाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल गगन गगनंतर जिमी असमान सारे करन निमस्कार, धरनी तूं वी चरन चुम्म के आपणी खुशी लैणी बणाईआ। उह मेरा रूप अनूप होवे विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्ण ब्रह्मा शिव करोड ततीसा देवत सुर सारे ओसे दा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

धरनी कहे मेरे मालका की नानक दी होवे निशानी, निशाना दे जणाईआ। पुरख अकाल किहा जरा निगह मार लै दो जहानी, दोहां रूपां तों बाहर वेख वखाईआ। उह मेरा नूर होवे नुरानी, शब्दी डंक सुणाईआ। उहदी तार सितार वज्जे त्रेते वाले सुरंगे दी जिस दी खेल महानी, राजा जनक दए गवाहीआ। तेरा लेखा जाणे ते वेखे जीव पुरानी, घट घट अंदर फोल फुलाईआ। मेरे नाम दी मेरे संदेसे दी हुक्म दी पैगाम दी सति दी सच दी ब्रह्ममत दी आत्म तत्त दी उह चार वरनां अठारां बरनां हिंदू मुसलम सिख ईसाई पारसीआं बोधीआं सुणावे धुर दी बाणी, धुर दी धार धार जणाईआ। धरतीए नीं उह तेरा आदि दा अन्त दा जुगा दा जुगन्त दा सच्चा बणे हाणी, हाणी इक्को वेख वखाईआ। ओस ने फेरने अठसठ तीर्थ वरोलणे समुंदरां वाले पाणी, भज्जे वाहो दाहीआ। उह निज नेत्र नाल तक्कणी चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भज सेतज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

धरनी कहे मेरे प्रभू दस्स दे इक्को बात, बातन परदा दे खुलाईआ। की सतिगुर नानक तेरा रूप दिन वेखे कि रात, रुतडी कवण महकाईआ। बाहरों तक्के कि अंदर मारे ज्ञात, काया माटी भाण्डे फोल फुलाईआ। की नौं दवारे वेखे कि अंदरों खोल्ले बजर कपाट, त्रैकुटी दा लेखा दए मुकाईआ। की रसना नाल गावे अगम्मी शब्द अनादी नाद, अनहद धुन सुणाईआ। की धरनी वेखे कि वेखे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। की आलस विच्च निंदरा विच्च होवे कि दिवस रैण जाए जाग, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। पुरख अकाल किहा धरनीए मेरा नानक रूप सभ दे विच्च विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। उह वखावे खेल अगम्मा तमाश, तमाशबीन बणे लोकाईआ। मैं वेखां उतों अकाश, सचखण्ड बैठे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।

पुरख अकाल ने सतिगुर नानक निरगुण नूं किहा जाह लोकमात, धरनी धरत तेरा राह तकाईआ। आह लै जाह मेरी सतिनाम दी दात, धुर दे दाते अगम्मी झोली दिती पाईआ। वेखीं कोई ना ज्ञात पात, वरन बरन वंड ना कोई वंडाईआ। आत्म दा परदा खोल्लणा ब्रह्म दा खोल्लणा ताक, ईश जीव इक्को रूप दरसाईआ। मेरे नूर दा जोत दा हर घट अंदर करना प्रकाश, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। साचे शब्द दा वजाउणा नाद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। हर हिरदे विच्च मेरी कराउणी याद, यादाशत पिछली देणी भुलाईआ। मेरे प्यार नूं करना अबाद, नौं खण्ड पृथ्वी विच्च टिकाईआ। जा के अगली साजणा साज, पिछला झगढा रहे ना राईआ। मेरे हुक्म दा दस्स सचखण्ड दवारे इक्को पुरख अकाल दा राज, रईअत दो जहान नजरी आईआ। जिस दे अग्गे अवतार पैगंबरों गुरूआं नूं देणा पैणा जवाब, अन्तम लेखा मंगे थाउँ थाईआ। उह नूर अल्ला वाहिद, वाहवा जिस दी वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप चुकाईआ।

पुरख अकाल किहा धरनीए तेरी जावां पैज सवारी, मेहर नजर इक्क उठाईआ। आह वेख मेरी नानक नाल नानक वाली यारी, नानक रूप मेरा नजरी आईआ। इस ने इक्क गल्ल दस्सणी जगिआसूओ उह दुनियां वालिओ पंजां तत्तां वालिओ जे चौहन्दे ते पीओ नाम दी खुमारी, रस काया आत्म अन्तर निझर झिरने विच्चों झिराईआ। जिस अमृत रस नूं पीण नाल जन्म लैणा ना पए दुबारी, चुरासी वंड ना कोई वंडाईआ। तुहाछा लेखा चित्रगुप्त ना सके वखाली, राए धर्म ना दए सजाईआ। लाडी मौत तुहानूं ना फिरे संभाली, तुहाछी माटी खाक अन्त धरती खाक विच्च मिल जाईआ। तुहाछी आत्मा परमात्मा दा नूर सचखण्ड दरगाह साची जाए संभाली, जिथों फेर ना कोई कछाईआ। ओथे ना कोई शाह ना कोई कंगाली, इका नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

जिस वेले नानक नूं पुरख अकाल ने एह दिता वर, खुशीआं विच्च जणाईआ। झट्ट कलिजुग गया डर, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। उठ के गया खड, आपणी लई अंगढाईआ। निरअक्खर धार लिया पढ़, सतिनाम दी वज्जदी वधाईआ। मैं वी उस दवारे जावां चढ़, जिथे बैठा बेपरवाहीआ। जिस ने ना मेरा सरीर बनाया ना बनाया धड, तन वजूद ना कोई रखाईआ। मेरे अंदर इक्को कूड कुडिआरा भर दिता गढ़, हउमे हंगता हँकार विच्च टिकाईआ। नाले मैंनूं खुशी नाल किहा कलिजुगा किसे दे धर्म दी रहण नहीं देणी जड़, चोटी देणी हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक्क वरताईआ।

कलिजुग कहे धरनीए खोल लै अक्ख, आपणा नैण खुल्लाईआ। मेरे वेख खाली हत्थ, मैं तैनूं रिहा जणाईआ। उह की करे पुरख समरथ, जो करता धुरदरगाहीआ। जिस नानक नूं दे के वथ्थ, सतिनाम लोकमात तेरे विच्च टिकाईआ। मेरा की करूंगा हठ, जिथे निरगुण दी सरगुण विच्च वज्जे वधाईआ। उस ने चार वरन करने इक्क, दुतीआ भाउ ना कोई रखाईआ। तूं प्रभू नूं आख कुछ मेरा वी हक, कलिजुग कहे हकीकत दे मालक नूं दे सुणाईआ। मैं हुण उहदे चरनां जावां नट्ट, भज्जां वाहो दाहीआ। आपणा लेखा देणा दस्स, भेव अभेद खुल्लाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले जे तूं सभ कुछ नानक नूं दिता ते मेरी हो गई बस, मेरी चले ना कोई चतुराईआ। मेरी आयू चार लक्ख बत्ती हजार मैं किस बिध लवां कट्ट, कटाकस नजर कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा वड्ड वड्डाईआ।

धरनी कहे कलिजुग तूं आपणी कर अरदास, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। उह वेखणहारा शाहो शाबाश, वड्ड वड्डा इक्क अखवाईआ। कलिजुग किहा मेरे माई बाप, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। मेरी झोली मेरी पा दे दात, सतिगुर नानक दा हिस्सा सतिगुर नानक कोल रखाईआ। मैं चौहन्दा मेरा छेती छेती लहणा देणा पूरा होवे खात, बहुती आयू ना कोई रखाईआ। तूं उतों वेखणा मार ज्ञात, धरनी उते निगाह टिकाईआ। मैं आपणा पन्ध मुकाउणा

वाट, भज्जणा वाहो दाहीआ। पिछलिआं अवतारां दी सारयां दे अंदरों कर देणी सति वाली दात नास, पैगम्बरां दा नूर ना कोई चमकाईआ। तूं सतिगुर नानक नूं इक्क संदेसा देणा आख, उह इक्क वार मेरे वल निगह लै उठाईआ। फेर मैं ओसे नूं कहांगा कुछ मेरा लेखा बणा दे विच्च मात, मैं वी एसे दे उते आपणा झट्ट लंघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप चुकाईआ।

कलिजुग झट्ट पै गया लम्मा, डण्डावत विच्च सीस निवाईआ। प्रभू मेरे चौथे जुग दा बंन, हद तेरे चरनां विच्च रखाईआ। मैं चाहुंदा तेरी सृष्टी नूं डंन, नाम सिमरन वाला रहण कोई ना पाईआ। अमृत रस पिच्छे जगत जगिआसू फिरे भन्ना, काया मन्दर विच्चों हत्थ किसे ना आईआ। दोए लोचना वाला तैनूं वेखण विच्च होवे अन्ना, निझ नेत्र ना कोई रुशनाईआ। कन्नां तों सुणन वाला सरवण करन वाला आपणा मन ना सके बन्ना, मनसा मन ना कोई तजाईआ। मैं वी तेरा लाडला सुत ते मैं वी तेरा दुलारा चन्ना, चन्द सूरज मैनूं सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

पुरख अकाल किहा कलिजुग उठ मेरे दुलारे, दूलिआ दिआं जणाईआ। सतिजुग त्रेता दवापर बीते विच्च संसारे, आपणा पन्ध मुकाईआ। हुण खेल तेरे अपारे, अपरंपर तैथों रिहा कराईआ। तूं जा नानक दे दवारे, दर ठांडे सीस झुकाईआ। उह तैनूं बख्ख देवे ते मेरा नहीं कोई इनकारे, बिना नानक तों रहमत झोली कोई ना पाईआ। झट्ट कलिजुग कीती निमस्कारे, पुरख अकाल सीस निवाईआ। ढैह डिग्गा नानक दे काया मन्दर अंदर वाले चुबारे, जिथे पौड़ी डण्डा नजर कोई ना आईआ। पहलों तक्के जोत दे नजारे, नूर नुराना नूर नूर रुशनाईआ। नाल सुणे शब्द दे धुनकारे, अनहद नादी वज्जदी दिसी वधाईआ। फेर अमृत झिरना डिगा झिरे अपर अपारे, जिस दी बूंद स्वांती हत्थ ना किसे आईआ। कलिजुग रो रो धाहां मारे, धवल उते सीस सीस नाल टकराईआ। झट्ट ओस वेले सतिगुर नानक समाधी विच्चों नैण उघाड़े, आप आपणा आप बदलाईआ। ओस वेले सुणे ओस दे हाढ़े, जो हौके लै लै रिहा सुणाईआ। तूं सतिगुर नानक मैं आ डिग्गा तेरे दर दरबारे, तेरा दरबार धुर दरगाह दा नजरी आईआ। मैनूं इक्को खैर पा दे बीखैरीया अल्ला अलाह तेरे अगगे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक्क उठाईआ।

झट्ट कलिजुग ने फेर सतिगुर नानक दा चरन चुम्मया, चुम्म के खुशी खुशी मनाईआ। बेशक सतिगुरू मैं कड़वा वांग तुम्मया, मेरे अंदर रस ना कोई नजरी आईआ। मैं चारों कुण्ट घुमिआ, अवतार पैगम्बर मैं सारे आपणे हुक्म विच्च भवाईआ। मैनूं पता लग्गा तैनूं पुरख अकाल ने आपणी धारों जम्मया, तेरा निरगुण सरूप जन्मयां किसे ना माईआ। तूं नानक दे वस्सया विच्च तन्नया, तन विच्च तेरा नूर डगमगाईआ। मेरा बौहड़ी समां होवे ना लम्मया, मैं धरती उते पै के रोवां मारां धाहींआ। झट्ट सतिगुर नानक ने फड के कंनया, हलूणा

दिता लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा रिहा खुलाईआ ।

नानक किहा सुण धरती नी तक्क, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ । सत्तां दीपां खोलू के अक्ख, नौं खण्ड पृथ्मी भुल्ल रहे ना राईआ । निगाह मार लै की भविक्खां विच्च अवतार गए दस्स, वेद व्यासा की दए गवाहीआ । की हजरत मूसा ने मूंह दे भार ढट्ट, तेरे उत्ते वास्ता पाईआ । की हजरत ईसा ने आपणे आप नूं सलीव नाल कीता लट, नैण मूंद के नैणां वाला वेख वखाईआ । की मुहम्मद ने लिख के लेखा कुरान मजीद विच्च दिता दस्स, चौदां तबकां तों बाहर किस दी पढाईआ । ओसे दे हुक्म नाल नानक निरगुण आया नस्स, तत्तां वाले निरगुण सरगुण विच्च नानक नानुक नज़री आईआ । आह वेख कलिजुग कूड कुकर्म दा भार लै के मेरे चरनां विच्च गया ढट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्णा माया ममता आपणे नाल मिलाईआ । मैं उह सतिगुर जिस दा सरूप सति, सदा सति सति सति विच्च समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा आप चुकाईआ ।

धरनी कहे सतिगुर नानक मेरी वेख लै खुलूड़ी गुत्त, हाए उफ दरोही मेरी दुहाईआ । एह बेशक प्रभू दा कलिजुग पुत्त, ओसे दा नज़री आईआ । एस ने चार कुण्ट जीवां जंतां दे गले दिते घुट्ट, औह वेख पैगंबरानूं मन्नण वाले बणे कसाईआ । नाले फड के हलूण्यां गुट्ट ज़ोर नाल दबाईआ । मेरे महिबूबा एस नूं मेरे उतों चुक्क, धरती रो के वास्ता पाईआ । ओनां चिर मेरी सुफल नहीं होणी कुक्ख, जिनां चिर एह फिरया वाहो दाहीआ । चार कुण्ट एसे ने पाउणी लुट्ट, सच दा रूप नज़र कोई ना आईआ । एन अमृत दी थां शरअ दा आब जगत वासना मन कल्पणा विच्च मनुष्षां नूं पिआउणी घर घर घुट घुट, तन वजूद विच्च टिकाईआ । जिस दे पीण नाल नानक तेरी वी ते पुरख अकाल दी वी लिव जाणी छुट्ट, आत्म परमात्म मेल ना कोई मिलाईआ । बेशक सतिगुर नानक तेरा नाम भंडारा सतिनाम अतुट्ट, पर कलिजुग ने कलिजुग जीवां कोलों कलिजुग दा रस रसना नाल देणा लगाईआ । एस गल्ल दा मैनुं बडा दुःख, जे तेरे मन्नण वाला तेरा नाम जपण वाला मूंह विच्च उह पाए थुक्क, जिस दा रस नज़र कोई ना आईआ । जे एह कलिजुग आपणे निशानउं जाए उक, फेर मेरी सहायता तूं करनी चाई जाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ ।

सतिगुर नानक किहा धरनी ना कर गिरयाजारी, गिरहा आपणी वेख वखाईआ । मेरा साहिब अकल कला कलधारी, वड दाता इक्क अखवाईआ । जिस ने जुग चौकड़ी सभ दी पैज सवारी, अवतार पैगंबरानूं गुरूआं आपणा हुक्म वरताईआ । ओसे दा नूर मेरे अंदर नूर जोत उजिआरी, दिवस रैण इक्को रंग रंगाईआ । ओसे दा शब्द ओसे दी धुनकारी, ओसे दा गीत ढोले सोहले रिहा गाईआ । कलिजुग मेरे आ डिगा मेरे दवारी, दर आयां दी लाज रक्खणी एह मेरे साहिब ने मेरे अंदर इक्क वस्त टिकाईआ । भावें एह कूडा ते एहदी

करनी ते क्रिया कुडिआरी, कुटम्ब एहदा बुरा नजरी आईआ। मैं एहदीआं वेखदा अक्खीआं वाली धारी, जो धरनी तेरे उत्ते टिकाईआ। मैं एसे कर के आपणी जोत शब्द दी धार नाल उहदी जड़ देवांगा उखाड़ी, लोकमात रहण ना पाईआ। मेरा रूप होणा दस अवतारी, नानक तों अंगद अंगद तों अमरदास ते रामदास ते गुर अरजन दा लेखा एहदे नाल जिस ने करनी त्यारी, त्रैगुण दा डेरा देवे ढाहीआ। जिस ने तत्ती लोह उत्ते बहि के खेल वेखणा ओस मुरारी, जो पारब्रह्म पतिपरमेशवर इक्को नजरी आईआ। फेर मेरा खड्ग खण्डा खड्के विच्च संसारी, हरिगोबिन्द मेरा रंग रंगाईआ। हरिराए उह शब्द धार करे जिस दी खेल संसार तों बाहरी, हरिकृष्ण मेरा रूप अनूप दए दरसाईआ। गुर तेगबहादर आवे ओस ओस दी लाउण वास्ते यारी, जिहड़ा यराना आदि तों अन्त अन्त तों आदि तुष्ट कदे ना जाईआ। ओसे दा नूर ओसे दा जहूर ओसे दा रूप अपार होवे गोबिन्द बलकारी, बल आपणा आप प्रगटाईआ। याद रखीं तेगबहादर दा सीस धरनी उत्तो जिस वेले तेरे उत्ते डिगा, कलिजुग दी आयू लक्खां लक्खां दी हो जाणी खुआरी, खाक खाक खाक विच्च मिलाईआ। जिस वेले गोबिन्द दे बच्चिआं नूं नीहां विच्च दिता उसारी, तेरा लेखा सारा देणा चुकाईआ। एह मेरा बोल नहीं शब्द धुर दा ते पैगाम एककारी, संदेशा नूर अलाहीआ। उस वेले धरनी कीती निमस्कारी, निउँ निउँ लागी पाईआ। कलिजुग उठ के किहा वाह मेरे सतिगुर मैं तेरे उत्तों बलिहारी, बलिहार बलिहार बलिहार मैं आपणा तेरे उत्तों कराईआ। फेर सतिगुर नानक ने सदेशा दिता उह कलिजुगा मूर्खा मुग्धा जरा निगह मार औह वेख मेरा गोबिन्द सुत्ता विच्च उजाड़ी, माछूवाड़े डेरा लाईआ। ओस वेले उहदे चरनां विच्च जा के करीं निमस्कारी, जे आपणा लेखा छेती देणा मुकाईआ। ओस वेले सारी सृष्टी दृष्टी होणी दुराचारी विभचारी, कर्म कांड वाला नजर कोई ना आईआ। कलिजुग ने आपणीआं भुजां बिना किसे शर्त तों बिनां धरन दे उत्ते पसारी, लंमा पै के कीती हाल दुहाईआ। मैं कंगालां दा कंगाली, धन दौलत सति दी मेरे कोल नजर कोई ना आईआ। पर सतिगुर नानक मैं तेरी किरपा नाल सति धर्म दा फल किसे रहण नहीं देणा डाली, खाली सारे देणे कराईआ। बिनां गोबिन्द तों गोबिन्द दी धार शब्द सतिगुर तों किसे दा रहण नहीं देणा नहीं कोई सवाली, सवाल हल्ल ना कोई पाईआ। जिस वेले ठीक रैण मेरी अन्धेरी होई काली, कलिजुग कहे मैं काला कण्पड़ काला वेस लैणा वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेशा इक्क सुणाईआ।

सतिगुर नानक किहा कलिजुग औह माछूवाड़ा वेखीं छेती मार झाती, मेरा नूर नजरी आईआ। जिस दा बाहरों तन दिसणा खाकी, अंदर पुरख अकाला बैठा बेपरवाहीआ। उह तेरी खुशीआं वाली होवे राती, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। ऐह मेरे हुक्म दी ओस दे चरनां विच्च भेट कर देणी पाती, पत्रका बिनां अक्खरां तों सतिगुर नानक हत्थ दिती फड़ाईआ। छेती पन्ध मुकण वाला ते मुक्के तेरी वाटी, अगला लेखा लेखे विच्चों कहुआईआ। बिना गोबिन्द तों तेरा होर बणना नहीं कोई साथी, अवतार पैगम्बर गुर बाकी पिच्छा जाण छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक इक्क अखवाईआ।

कलिजुग कहे नी धरनीए वेख मेरे सतिगुर नानक दी सलाह, मशवरा नाम वाला जणाईआ । तेरे उत्तों मेरा पन्ध रिहा मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म सुणाईआ । तूं मेरा बणना गवाह, शहादत देणी भुगताईआ । जिस वेले गोबिन्द माछूवाड़े सुत्ता आ, आपणा डेरा लाईआ । मैं ओस वेले जावां नाल चाअ, भज्जां वाहो दाहीआ । पहलों जा के हौली जिही सतिनाम दा मंतर दिता सुणा, सति सति समझाईआ । झट्ट सतिगुर नानक किहा कलिजुग इक्क होर गल्ल याद रक्ख, कमलिआ तेरे हिरदे विच्च दिआं वसाईआ । सतिनाम तों बाद वाहे गुर दी फतिह दा डंका दर्ई वजा, बिना वाहेगुरू दी फतिह तों गोबिद तेरी आस ना पूर कराईआ । झट्ट कलिजुग ने सीस लिआ निवा, कन्न फड़ के मथ्था रगढ़ के चरनां उत्ते टिकाईआ । सतिगुर नानक तेरा रूप गोबिन्द वाह वा वाह वा वाह वा, वाह वा ओसे दी बेपरवाहीआ । मैं ओस नूं मन्नांगा परमात्मा ओसे नूं मन्नांगा खुदा, जो खुद मालक हो के मैंनूं नजरी आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ ।

धरनी कहे वेख कलिजुग वे वीरा, भज्जी चारों कुण्ट, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वाहो दाहीआ । तैनूं बचन हुक्म मिल गया धुर दा हीरा, अनमुल्लडा नानक सतिगुर दिता वरताईआ । मेरे उत्ते कदे किसे दी रही नहीं मिल्ख जगीरा, कोटन कोट जुग बीते वाहो दाहीआ । मेरा मालक इक्को पीरन पीरा, जिस नूं बेऐब कहे खलक खुदाईआ । जो अन्तम तेरी मेरी दोहां दी कट्टे भीडा, अगला पन्ध मुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ ।

कलिजुग फेर सतिगुर नानक दे चरनां दी लाई धूढ़ी, खाक मस्तक नाल रमाईआ । किहा मैं तेरा सेवक मूर्ख मूढ़ी, जगत बुद्धि ना कोई चतुराईआ । मेरी आशा मनशा मेरे समें विच्च कूड़ी, कूड़ क्रिया मैं सभ दे नाल करनी कुडमाईआ । हर घट दे अंदर तूं नाम धरना ते मैं धरनी हँकार गरूरी, हउमे विच्च रलाईआ । पर मेरा बचन सतिगुर भुल्लणा नहीं जरूरी, जरूरत तेरे अगगे टिकाईआ । मैं कलिजुग जीवां नूं नाले भुलाउँदा जावां ते नाले तेरा नाम सुणाउँदा जावां नानक दी करो मशहूरी, मशवरे मन दे नाल बणाईआ । पर सतिगुर नानक किहा कलिजुग एह तैनूं नहीं मजबूरी, मैं सभ कुझ आपे दिआं वखाईआ । झट्ट कलिजुग किहा सतिगुर नानक तूं मैंनूं चाढ़ी रंगण गूढ़ी, अनन्त रूप दिता वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ ।

कलिजुग कहे सतिगुर नानक मैं चारों कुण्ट सेव कमावांगा । तूं वड्डा देवी देव, तेरा नाम वड्डिआवांगा । फेर खेल दस्सां अलक्ख अभेव, अगम्म अगोचर इक्क समझावांगा । जो वसे निहचल धाम निहकेव, अट्टल उसे दा रूप अखवावांगा । पर किसे दे अंदर मैं साचा नाम वसण नहीं देणा मेव, हँ ब्रह्म आपणे रंग रंगावांगा । बेशक सारी सृष्टी कितनी गाए रसना जेहव, सिपतां विच्च सिपती ढोले जगत सलावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकावांगा ।

कलिजुग किहा सतिगुर नानक तैनुं गाउणा सभ ने रसना, सतिनाम सतिनाम सतिनाम सुणाईआ। पर मैं तेरी किरपा नाल ओनां दे अंदर वसणा, साढे तिन्न हत्थ मन्दर डेरा लाईआ। आपणा तीर अणियाला कसणा, नौआं दारयां दवारयां विच्च देणा चलाईआ। फेर मैं खुशीआं दे विच्च हस्सणा, दो हत्थां ताडी देणी लाईआ। ओस वेले सृष्टी दी दृष्टी ने सच प्यार छड्डणा, जगत प्यार विच्च भज्जे वाहो दाहीआ। रसना दे रस नाल लडावना लडणा, आत्म रस हत्थ किसे ना आईआ। भावें उह किसे महल्ल वसण, किसे घर वसण, ते भावें वसण विच्च पबबणा, पब्लिक पलक दे विच्च आपणा रंग रंगाईआ। पर ओनां दा तन वजूद बिनां तेरे प्यार तों मच्चणा, त्रैगुण अगनी अगग ना कोई बुझाईआ। मनुआ दह दिशा उठ उठ नच्चणा, जगत तृष्णा ना कोई गवाईआ। कोटां विच्चों तेरा गुरमुख प्रेमी जिस नूं खुशीआं दे रंग रतणा, आत्म रस जाम देणा पिआईआ। तेरी नाम खुमारी उहदा इक्को मध ष याला मुख तों बिनां लग्गणा, जिस दा रस रसना जिह्वा समझ सके ना राईआ। फेर मैं झट्ट माछूवाड़े नूं भज्जणा, मैंनुं उह वेला वक्त दे दृढाईआ। मैं उस गोबिन्द नूं लभ्भणा, जिस नूं पुरख अकाल आपणा सुत्त लैणा बणाईआ। जिस ने पुरी अनन्द नूं छड्डणा, अनन्द गुरसिखां विच्च टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

कलिजुग कहे धरनी सुण लै हुक्म संदेसा, शहनशाह की जणाईआ। जेहड़ा रहे आदि जुगादि हमेशा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। ओस दा रूप अनूप सतिगुर नानक जिस दी बाहरों लभ्भे किसे ना रेखा, अनभव दृष्टी बिना नजर किसे ना आईआ। उस दा दसवां जामा मैंनुं रूप नजर आया जिस दा नां होणा दस दस्मेशा, दहि दिशा जिस दी वज्जणी वधाईआ। ओस ने धार चलाउणी मुच्छ दाहड़ी ते केसा, केसगढ़ दए वडयाईआ। शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश सभ दा इक्को जिहा लेखा, ऊँच नीच जात पात ना कोई रखाईआ। ओस दे अगगे मेरा चलणा नहीं कोई पेचा, मैं बलहीण हो के दिआं दुहाईआ। मैंनुं फेर याद आउँदी जेहड़ी अरजन ने सीस पवाउणी रेटा, तत्ती लोह मेरा तन दए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि सच दा हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ।

धरनी कहे कलिजुग वेखीं बणी ना कलकाती, आपणा रूप बदलाईआ। तेरी ओस पुरख अकाल दे हत्थ हयाती, जेहड़ा सभ दा पिता माईआ। जिस ने तैनुं दवाई नानक कोलों दाती, अमोलक अगम्म दिती वरताईआ। जरा ओस दे चरनां वल झाकी, जिस दा चरन रूप रेख तों बिना सोभा पाईआ। ओस दे अगगे नहीं कोई आकी, सिर सके ना कोई उठाईआ। आह वेख मेरे उते विष्ण ब्रह्मा शिव नूं आदि तों दिती जिस ने पाती, पत्रका दिती फडाईआ। तुहाढ्हा लेखा नाल लक्ख चुरासी, चारे खाणीआं वंड वंडाईआ। चारे बाणीआं मेरी होणी सारवी, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। तेई अवतार रूप धरा बहुभाती, पैगम्बर आपणी खेल खिलाईआ। नानक नूर होवे अबिनाशी, गोबिन्द विच्च समाईआ। गोबिन्द जोत होवे प्रकाशी, दो जहानां डगमगाईआ। माछूवाड़ा जिस दी रक्खे आसी, सण्तस रिखी

निशाना गए लगाईआ। बालमीक ने ओथे गाई सी गाथी, ढोले राम वाले सुणाईआ। बावन ने राजे बल नूं किहा सी औह वेख कलिजुग दा अन्तम साथी, जोधा सूरबीर वड वडयाईआ। जिस ने एथ्थे आउणा हत्थ मार के उप्पर छाती, छत्तरधारी नजर कोई ना आईआ। ओस वेले ना कोई कुटम्ब होवे ना सज्जण साकी, बंस सरबंस सारा प्रभ दी भेट कराईआ। उह बड़ी सुहज्जणी होणी राती, यारडा सत्थर सेज लए हंछाईआ। नाले खुशीआं विच्च करे गाथी, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नजर कोई ना आईआ। कलिजुग तूं वी ओस वेले नूं वाचीं, वाचक हो के आपणा लहणा लैणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक धुर दी खेल आपणे हत्थ रखाईआ।

धरनी कहे मेरे सुण के कन्न हो गए बन्द, मैं मूंह दे भार आपणा आप टिकाईआ। मैं इशारा दिता वे सुण लै तारा चन्द, चौधवीं चन्द वाल्या तैनुं दिआं जणाईआ। औह वेख जेहड़ा मुहम्मद चौदां सदीआं शरअ नूं गया कर के बन्द, परवरदिगार अगगे वास्ता पाईआ। अन्तम तुहाछा वी लेखा होणा खण्ड खण्ड खण्ड, खण्डा गोबिन्द वाला दए गवाहीआ। जिस दी आशा रक्ख के गई अष्टभुज जिस नाम जणाया चंड प्रचंड, प्रचंडका आपणी धार बणाईआ। जेहड़ी सारी धरती दी सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग दीनां मज्जबां विच्च हुंदी रही वंड, हिस्से मनुशां वाले पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ।

कलिजुग किहा मैंनुं इक्क होर आ गई खबर, पता नहीं बेखबर दिती सुणाईआ। मेरा अंदरों टुट्ट गिआ सबर, धीर रही ना राईआ। मैंनुं ऐह दिसदा गोबिन्द बड़ा जबर, जाबर नूर अलाहीआ। जिस ने कदी पैणा नहीं मड़ी गौर कबर, कबरां तों बाहर डेरा लाईआ। उहदा लेखा दिसे उते अंबर, नूर नुराना नूर डगमगाईआ। ओह सर्ब कला भरतंबर, भरपूर रिहा सर्ब थाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

झट्ट कलिजुग कहे मैंनुं इक्क होर वज्ज गया धक्का, पता नहीं नानक ने किधरों दिता लगाईआ। मैं चारों कुण्ट करदा पता, पतिपरमेशवर किधरों हुक्म सुणाईआ। फेर मैं मलण लगगा अक्खां, नैणां नीर वहाईआ। झट्ट नजर आया औह वेख लेखा मुक्कदा मदीना मक्का, काअबिआं पए दुहाईआ। ईसा दा लेखा रहणा नहीं बूरा कक्का, कूड कुडिआरा डेरा ढाहीआ। मूसा फिरे नट्टा, सदी वीहवीं राह तकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा इक्को दे नाल मता, जो मत मतांदर डेरा ढाहीआ। झट्ट गोबिन्द दा दिसे रूप अनूप जिस दे विच्च अगम्मी सता, जोती जोत नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ।

कलिजुग कहे मैंनुं होर हो गिआ इशारा, मेरे अंदर दिता वृद्धाईआ। कलिजुगा औह वेख तेरा किनारा, नईआ डोले थाउं थाईआ। जिस वेले गोबिन्द ने गुरू ग्रन्थ साहिब

लिखया दुबारा, इक्क कन्ना विच्च देणा लगाईआ। ओस ने लेखा मुक्का वखा देणा चार यारा, मुहम्मद दी सफा दए उलटाईआ। ईसा मूसा सुट्टे मूंह दे भारा, सिर सके ना कोई उटाईआ। तेरा मिटे अन्ध अन्धयारा, लोकमात रहण ना पाईआ। फेर उस दा रूप होणा अगम्म अपारा, तत्तां तों बाहर खेल खलाईआ। शब्दी शब्द होए जोत जोत दी धारा, धरनी धरत धवल आपणा रंग रंगाईआ। इक्को हुक्म देवे सच्ची सरकारा, शाह सुल्ताना आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

कलिजुग कहे मैं वेखणा जरूर कलगीधर, जगदीश जिस नूं दए वडयाईआ। जिस दे कोलों मैंनू मिलणा वर, मेरी झोली देणी भराईआ। मेरी कूडी उखडनी जड, लोकमात रहण ना पाईआ। मैं कूड कुडिआर दी अगनी जावां सड, हवन सच ना कोई कराईआ। मेरा सीस रहे ना धड, तन वजूद ना कोई वडयाईआ। मैं जीउंदा जावां मर, मर जीवत आपणा आप बदलाईआ। मैं जरूर ओस साहिब दा वेखणा घर, जिस घर विच्चों गोबिन्द नूं मिले वडयाईआ। की उह रूप नरायण नर, की करता धुरदरगाहीआ। की परवरदिगार सच्चा यार, यराना सभ दे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुलाईआ।

कलिजुग कहे मैं गोबिन्द दे चरन दवारे पुज्जा, माछूवाडा सेज सुहाईआ। मैं आपणा भेव रक्ख के गुज्जा, दूरों सीस दिता निवाईआ। नाले आपणा नैण कर के ऊंधा, अक्ख लई शरमाईआ। झट्ट गोबिन्द हस्स के किहा आह वेख नानक सतिगुर मेरे अंदर वड के कूंदा, दूजा नजर कोई ना आईआ। जिस दा लेखा रूह बुत्त बुत्त रूह दा, रूह बुत्त तों बाहर नूर जोत विच्च समाईआ। एहो लखश एहो लच्छण पूरे सतिगुर दा, जो शब्द शब्द शब्दी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

कलिजुग कहे मैं अक्खां झट्ट लईआं मीच, हत्थ सिर उत्ते टिकाईआ। मैं गाया गोबिन्द माही दा गीत, गोबिन्द तेरी बेपरवाहीआ। तूं दस्स तैनूं मन्दर चंगा कि मसीत, कि काअबिआं खुशी बणाईआ। ऊँच चंगा कि नीच, शतरी ब्राह्मण शूद्र वैश किस नूं गले लगाईआ। झट्ट गोबिन्द ने किहा कलिजुग ऐस धरनी नूं कहो मेरे सतिगुर नानक दी करे तस्दीक, शहादत देवे पाईआ। मेरा किसे दा ना कोई शरीका ते ना कोई शरीक, लाशरीक मेरा रूप दिता बणाईआ। मैं त्रैगुण तों अतीत, त्रैभवण दा मालक मेरा खेल रिहा खिलाईआ। मैं वस्सया बेशक पंजां तत्तां विच्च ठीक, पर ठाकर दा रूप मेरे नाल इक्को नूर बैठा बणाईआ। मैं सभ नूं वेखां हस्त कीट, हस्त कीट इक्को रंग रंगाईआ। आह लै होर तैनूं दस्सां हुक्म इक्क अनडीठ, की अनडिठडी कार कमाईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला मैंनूं माछूवाडे कर रिहा बख्शीश, रैहमत मेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा नूर नूर रुशनाईआ।

कलिजुग कहे गोबिन्द की पुरख अकाला पावे तेरी झोली, कुछ मैनुं दे वरवाईआ। गोबिन्द किहा उह कुड़या उह किसे कंडे ना जावे तोली, अतुल्ल रिहा वरताईआ। तेरी सुरत रहे ना भोली, भोलिआ दिआं समझाईआ। जिस साहिब दी आदि जुगादी दी सारी सृष्टी दी दृष्टी अन्तर निरंतर आत्म गोली, सेवा विच्च सेवक सारे झट्ट लंघाईआ। ओस दी अन्त समझ लै बोली, की ढोला रिहा सुणाईआ। जिस ने दीन दुनियां दे मज्जहब दी चुकाउणी रौली, रौला नाम कलमा ना कोई रखाईआ। सभ नूं अमृत आत्म दी देवे पौली, धुर दा रस इक्क चखाईआ। इक्क खेल वेखणा वरतणा हौली हौली, मेरे ढईए तों बाद की आपणी कार भुगताईआ। नाले आशा पूरी करे धरनी धरत धवल धौली, जो धर्म दा राह तकाईआ। मेरा जुस्सा वेख मेरे फरकदे वेख डौली, जो दो जहान रहे डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप वरवाईआ।

कलिजुग कहे गोबिन्द तेरा की रूप होवेगा बलकार, बलधारी दे जणाईआ। गोबिन्द किहा कलिजुग पहलों मेरे पुरख अकाल नूं कर निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। फेर आ मेरी खण्डे दी थल्ले धार, खण्डा खिच के उत्ते दिआं टिकाईआ। फेर कहीं मेरा कोई नहीं यार, बिना गोबिन्द तों यराना सच ना कोई कमाईआ। फेर मै तैनुं होर दिआं अख्त्यार, मुखतारनामा नवां दिआं लिखाईआ। तूं चारों कुण्ट फिरीं गली बजार, कूचे काया वाले वेख वरवाईआ। काया मन्दर अंदर कराई विभचार, आपणा बल प्रगटाईआ। तेरा लहणा देणा फेर छेती देवां निवार, लोकमात रहण ना पाईआ। पर याद रखीं मेरा रूप हो जाए शब्द सतिगुर ते शब्द दी धार, पंजां तत्तां तत्त ना कोई जणाईआ। नौं खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां करांगा खबरदार, बेखबरां इक्को हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा लेखा दिआं समझाईआ।

गोबिन्द किहा कलिजुग आह मेरा कन्ना वेख लै विच्च कायनात, दीन दुनी देणा समझाईआ। जिस वेले तेरी अन्त आई अन्धेरी रात, मुहम्मद दी चौधवीं सदी बैटे आपणा पन्ध मुकाईआ। मूसा वेखे मार ज्ञात, वीहवीं सदी नैण उटाईआ। ओस वेले कोई आत्म दा देवे ना साथ, परमात्म रंग ना कोई रंगाईआ। अंदरों निझर झिरने विच्चों बूंद ना मिले स्वांत, बाहरों पी पी के आपणा ढिड भराईआ। अन्तशकरन किसे दा ना होवे साफ, पतित पुनीत ना कोई रखाईआ। मिले मेल ना कमलापात, पतिपरमेशवर आपणी गोद ना कोई टिकाईआ। ओस वेले लेखा होणा ओस साहिब अबिनाश, जो अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जिस ने मण्डल मंडप पाउणी रास, लक्ख चुरासी गोपी काहन निरगुण सरगुण धार आत्म परमात्म वेख वरवाईआ। उस दा रूप रंग रेख ना कोई ज्ञात पात, दीन मज्जब वंड ना कोई वंडाईआ। ओस ने हुक्म देणा शंकरा उठ खलो उतों कैलाश, कला आपणी लै प्रगटाईआ। उह ब्रह्मे आपणा लेखा लै वाच, परदा परदिआं विच्चों खुल्लाईआ। विष्णूं तूं केहडी दिन्दा दात, चारों कुण्ट भज्ज आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर हुक्म सुण ओस प्रभू दा साख्यात, जो साख्यात जगत जहान दीन दुनी वरताईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा दए लिखाईआ ।

धरनी कहे हाए एह किहो जिहा वेला आउणा वक्त, प्रभू की तेरी बेपरवाहीआ । की सारी दुनियां सृष्टी तैनुं भुल्ल जावे जगत, जागरत जोत बिन वरन गोत ना कोई रुशनाईआ । कोटां विच्चों कोई दिसे तेरा भगत, भगवान तेरा दरस कोई ना पाईआ । उह किसे लेखे लगगेगी बूंद रकत, जनणी कुक्ख कवण वडयाईआ । झट्ट कलिजुग ने किहा उह धरनीए मेरी गोबिन्द नाल शर्त, ओन मेरी शरअ दिती बणाईआ । ओस मैनुं प्यार दिता दिलासा दिता जिथ्थे मेरे बच्चे नीहां उते आए फर्श, एस फर्श उते फैसला तेरे हत्थ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा परदा परदिआं विच्चों उठाईआ ।

धरनी कहे मैं रोवां नाले हस्सां, बिन नैणां नीर वहाईआ । मैं किस नूं हाल दरसां, किस नूं दिआं सुणाईआ । किस दी चरनी ढट्टा, कवण लए उठाईआ । मैं फिरदी मन्दर मव्वां, मस्जिदां पन्ध मुकाईआ । शिवदवालिआं कह कह आपणी खुलीआं कीतीआं लिटां, मेंढी लई खुलाईआ । मैं किस दे दवारे विका, जो मेरी कीमत लए पाईआ । मेरा लेखा लहणा देणा निक्का, निक्क्यों वड्डा कवण मेरा लेखा आपणे हत्थ रखाईआ । मैं चौहन्दी जे कलिजुग कूड कुडिआरे दा बदल जाए सिक्का, बेशक भावें सिक्कम तों शुरु होवे लड़ाईआ । मेरी एहो अन्तम ,इच्छा, निरइछत पूरी देणी कराईआ । पुरख अकाल दीन दयाल तेरा आदि जुगादि इक्को विशा, विशेष तेरा भेव कोई ना पाईआ । तूं मैनुं कोझी कमली नूं आपणे धुर दे प्यार दी पा दे भिछा, भिच्छक हो के झोली डाहीआ । मैं चौहन्दी सारी दृष्टी उते सृष्टी उते नानक दे अगम्म नाम दी आत्म परमात्म दी परमात्म आत्म दी सभ दी होवे सिखा, सिखिआ दूजी नजर कोई ना आईआ । जेहडा आदि तों विष्ण ब्रह्मे शिव नूं लिख के दिता, चार जुग ओसे दा ढोला गाईआ । तूं अपरंपर स्वामी पिता, पतिपरमेशवर तेरे हत्थ वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ ।

पुरख अकाल कहे मैं गहर गम्भीरा, गवर इक्क अखवाईआ । मेरा ना कोई तन वजूद सरीरा, रूप रंग रेख ना कोई रखाईआ । ना कोई खुशी गमी दिलगीरा, चिन्ता चिखा ना कोई जणाईआ । मैं जुग जुग सभ नूं देवणहारा धीरा, धीरज आपणे विच्चों प्रगटाईआ । पर इक्क बचन धरनीए याद रक्ख लै, जिस वेले रविदास गंगा विच्च दिता सी कसीरा, उस दी कौडी धुर दे लेखे पाईआ । नाले हस्स के किहा भगतां दा आप चुकांगा बीडा, अन्तम कलिजुग आपणे कंध उठाईआ । बेशक दीन दुनी दा मार्ग होवे भीडा, औरवी घाटी ना कोई चढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल खेल खेल नाल बणाईआ ।

धरनी कहे मेरे उत्ते खेल अनन्त, नौं खण्ड सत्त दीप वक्ख वक्ख वज्जी वधाईआ । सच्च दस्स मेरे भगवन्त, की तेरी बेपरवाहीआ । अनेक मार्ग दस्से के गए तेरे सन्त, सूफी सिफतां विच्च सालाहीआ । अवतार पैगम्बरां गुरूआं तेरे नाम कलमे दी बणाई बणत, कागज कलम छाही नाल लिखाईआ । पर फेर वी क्यों नहीं पवित्र हुंदे तेरे जीव जंत, निर्मल रूप ना कोई जणाईआ । क्यों नहीं गढ़ टुट्टणा हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोई समाईआ । सच्च दस्स, तूं परमात्मा इक्क, सर्व विआपक तेरी आत्मा इक्क, तेरा पंजां तत्तां वाला दिता होया सरीर इक्क, क्यों ना तेरा इक्को नाम जप के सारे झट्ट लंघाईआ । मैं चौहन्दा मेरे उत्ते मानस मानुश मनुख तेरे प्यार विच्च जाण टिक, टिककी तेरी चरन धूढी खाक रमाईआ । झट्ट कलिजुग नूं आ गई निच्छ, छिक मार के रिहा सुणाईआ । नी धरनीए जिंनां चिर दीन दुनी कूड़ कुड़िआर दी करनी विच्च ना गई विक, ओनां चिर मेरा लेखा तेरे उत्ते ना कोई बदलाईआ । उह ते घड़ी नाम जपदे ते मैं अट्टे पहिर उनां दे अंदर मारदा रैहंदा खिच्च, खिच्च खिच्च के आपणे काया मन्दर विच्चों बाहर कहुाईआ । ओस सभा विच्च जांदा जिथ्थे रस रसना दा मिलदा मिठ, आत्म रस दी लोड ना कोई रखाईआ । नाले सभ दी ठकोरदा पिठ, कलिजुग जीवो सूरमिओ बहादरो गुर अवतार पैगम्बरां दा लेखा आपणे नाल रखाईआ । हुण वेखीं की लोहडा पैणा विच्च मुलां शेरवा, मुहम्मद दा मकबरा चार यार रो रो देण दुहाईआ । तेरा तेरे उत्ते चौधवीं सदी दा ओस दा पूरा होणा ठेका, अग्गे पट्टेदारी नजर कोई ना आईआ । इक्को हुक्म फिरना सतिगुर शब्द दा जो शब्द सतिगुर पुरख अकाल दा गोबिन्द बेटा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ । जो हर, घट अंदर लेटा, सुख आसण बहि के आत्म सेज सुहाईआ । उह इक्को एकंकार सच्ची सरकार दा बणना नेता, जिस निझ नेत्र भगतां देणे खुलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ ।

धरनी कहे मेरी जे वंड हो जाए दूर, हिस्सा जगत रहे ना राईआ । मैं अवतारां पैगम्बरां गुरूआं दी होवां मशकूर, निव निव लागौं पाईआ । जिस तरां तुसीं सचखण्ड विच्च इक्को नूर एसे तरां लोकमात इक्को रूप सृष्टी दिउ बणाईआ । इके सतिगुर नाम दे बेडे ते सभ दा इक्का बहे पूर, दूजी बेडी ना कोई चलाईआ । जो सभ दी आसा मनसा करे पूर, सो सतिगुर पूरा इक्को शब्द शब्द शब्द सतिगुरू लउ मनाईआ । जो ना नेडे ना दूर, घर घर आपणा खेल खलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, धरनी कहे मेरी आसा पूर कराईआ ।

धरनी कहे बेशक मेरी वंड बहु वंडी, हिस्से जगत वाले पाईआ । छोटी छोटी चली दीन दुनी दी डण्डी, डण्डावत इके नूं कर के झट्ट लंघाईआ । अन्तम कलिजुग लेखा आया कन्ड्ही, मेरे उत्ते रहण ना पाईआ । मैं इक्को पुरख अकाल तौं मंग मंगी, नानक सतिगुर नाल रलाईआ । तेरा सूरबीर योधा इक्को शब्द होवे भुयंगी, गोबिन्द नूर नुराना नजरी आईआ । जो अन्त लहणा देणा मुकाए सर्व वरभंडी, ब्रह्मण्डां आपणी कार भुगताईआ । मेरा महिबूब मेहरवान अन्तम मैंनूं लावे अंगी, अंगीकार कर के दया कमाईआ । धरनी कहे मेरी छाती

होवे टंडी, हरिजन गुरमुख गुरसिख भगत सन्त सूफी सभ प्रभ दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णुं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकडी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खेले बहुरंगी, पारब्रह्म पतिपरमेशवर पुरख अकाल अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ।

